स्वयंप्रकाश

आखिर चुक्कू कहाँ गया?

हम चार-पाँच दोस्तों की अंतरंग मित्र मण्डली में राधेश्याम सबसे बड़ा था। उसकी उमर और कद दोनों हमसे कहीं ज़्यादा थे। सातवीं कक्षा में ही उसकी मूँछें आने लगी थीं और आवाज़ भारी होने लगी थी। हम राधेश्याम के दोस्त हैं – यह जानकर कोई हमें ज़बर्दस्ती परेशान नहीं करता था। उल्टे हम ही थोड़ी दादागिरी कर लिया करते थे।

एक दिन राधेश्याम कहीं से भूरे रंग का एक छोटा-सा कुत्ते का पिल्ला उठा लाया। पिल्ला बड़ा प्यारा था। नाटा और बड़े-बड़े कानों वाला। उसकी आँखें एकदम गोल और चमकदार थीं। उसे देखने के लिए सारे बच्चे इकट्ठे हो गए। उसके सामने एक प्लास्टिक की कटोरी में दूध रख दिया गया... लेकिन दूध पीने की बजाय वह बारी-बारी से हम सबको ही देखे जा रहा था।

राधेश्याम ने बताया कि इसका नाम ओडायर है। दो-चार रोज़ में ही वह बच्चों के साथ हिल-मिल गया। और पता नहीं कैसे उसका नाम चुक्कू पड़ गया। शुरू-शुरू में तो राधेश्याम सबको बताता कि इसका नाम चुक्कू नहीं ओडायर है, पर फिर जैसे वो भी मान गया। उसका नाम चुक्कू ही ठीक है।

चुक्कू हरेक भागते हुए बच्चे के पीछे भागता। तुम रुक जाओ तो वो भी रुक जाएगा और एकटक तुम्हें देखने लगेगा। मानो इन्तज़ार कर रहा हो कि अब तुम क्या करते हो! चुक्कू को गोद में लेने की होड़ मची रहती और वह पूरी शाम इस गोद से उस गोद जाता रहता। कभी छीना झपटी से तंग आ जाता तो अपनी पतली-सी आवाज़ में भौंकने लगता। भौंकता तो बच्चे डर के उसे नीचे उतार देते, उसे घेरकर बैठ जाते और फिर उसी की तरह भौं-भौं करने लगते। यह देख वो चुप हो जाता और थोड़ी हैरानी से एक-एक का चेहरा देखने लगता – मानो सोच रहा हो कि ये क्यों भौंक रहे हैं? फिर जब सब अपने खेल में लग जाते तो धीरे-धीरे चलता हुआ वो एक कोने तक जाता और दीवार की तरफ मुँह करके थोड़ा-सा भौंकता, जैसे कह रहा हो – हाँ-नहीं-तो या जैसे अपनी आवाज़ टेस्ट कर रहा हो कि ठीक है या नहीं!

शुरू-शुरू में तो राधेश्याम के घरवाले चुक्कू को मुसीबत समझते और राधेश्याम को झिड़कते रहते कि कहाँ से उठा लाया इसे? सारा घर गन्दा कर रहा है! जा, छोड़के आ, जहाँ से लाया! लेकिन बहुत जल्द चुक्कू ने राधेश्याम के घरवालों का भी दिल जीत लिया। कुछ रोज़ बाद वह राधेश्याम की बहन प्रमिला की गोद में नज़र आने लगा। प्रमिला उसे अपने हाथ से बिस्किट खिलाती तो उसकी सहेलियाँ उसे देखती रह जातीं कि हाय! इसे डर नहीं लगता? अभी काट लेता तो?

थोड़े दिनों में चुक्कू सबका लाड़ला बन गया। वह किसी के भी घर में घुस जाता और कहीं भी कुछ भी खा आता। लेकिन रात को ज़रूर अपने घर पहुँच जाता और हमेशा राधेश्याम के बिस्तर के पास ही सोता।

जब चुक्कू थोड़ा बड़ा हुआ तो राधेश्याम उसे साइकिल पर बैठाकर घुमाने ले जाने लगा। चुक्कू को बैठाने के लिए राधेश्याम ने साइकिल के आगे एक टोकरी भी लगवा ली थी। बाहर घूमने में चुक्कू को इतना मज़ा आता कि घण्टा भर घूमने के बाद भी टोकरी से उतरने को तैयार नहीं होता।

फिर राधेश्याम उसे शाम को स्कूल के ग्राउण्ड पर ले जाने लगा। ग्राउण्ड में खुली हवा में दौड़ने-कूदने में चुक्कू को बड़ा मज़ा आता। राधेश्याम साइकिल पर चुक्कू के साथ रेस लगाता। हम बॉल को आसमान में उछालते और चुक्कू दौड़कर जाता और ज़मीन पर पड़ते ही बॉल को मुँह में दबोच लाता।

साल भर में तो हाल यह हो गया कि हमारे कैम्पस में कहीं से भी आवाज़ आती – चुक्कू!! तो चुक्कू जहाँ भी होता वहाँ से हाँफता-भागता हुआ उसे पुकारने वाले के पास पहुँच जाता। एक और भी कारण से चुक्कू काफी लोकप्रिय हो गया था। उसके डर से घर में चूहों का आना बन्द हो गया था। चुक्कू को चूहे की भनक भी मिल जाती तो उसके सिर पर भूत सवार हो जाता। वह पीछे पड़ जाता और इधर से उधर, उधर से इधर झपट्टे मार-मारकर चूहे को खदेड़कर ही दम लेता।

एक दिन अचानक चुक्कू गायब हो गया।

हर घर में चुक्कू को ढूँढा गया। यहाँ तक कि छत, बुखारी, अटाले की कोठरी और ताला जड़े कमरों को भी खुलवाकर देखा गया, लेकिन चुक्कू का कुछ पता नहीं चला। अन्दाज़ा लगाया गया कि शायद वह सड़क पर निकल गया हो और कोई बस या कार उसे कुचल गई हो, या हो सकता है किसी खुले मेनहोल में गिर गया हो और उसकी चीख-पुकार बाहर किसी को सुनाई ही न दी हो, या यह भी हो सकता है कि अनजाने में किसी की गाड़ी में बैठ गया हो... या हो सकता है चलते-चलते गंजी कम्पाउण्ड की तरफ निकल गया हो और

गलियों के खूँखार आवारा कुत्तों ने उसे चीरफाड़ कर फेंक दिया हो! लेकिन किसी ने कुछ देखा तो नहीं था।

राधेश्याम उदास रहने लगा। वह साइकिल पर घूमने भी जाता तो उसकी निगाहें इधर-उधर ढूँढती रहतीं – शायद कहीं चुक्कू दिख जाए! शाम को देर तक स्कूल के मैदान पर उसकी निगाहें चुक्कू के इन्तज़ार में रहतीं। लेकिन मैदान... इधर से उधर तक खाली रहता।

धीरे-धीरे हम चुक्कू को भूलने लगे।

एक दिन खेल-घण्टी में बालकिशन नाम के एक लड़के ने राधेश्याम को बुलाकर कहा कि कल उसने परदेसीपुरा में एक कुत्ते को देखा है जो हूबहू चुक्कू जैसा लग रहा था। हो सकता है चुक्कू ही हो! चुक्कू!! लेकिन परदेसीपुरा तो हमारे घर से नौ किलोमीटर दूर है। हमारा चुक्कू परदेसीपुरा कैसे पहुँच सकता है? ज़रूर बालकिशन को गलतफहमी हुई होगी।

लेकिन राधेश्याम का दिल नहीं माना। दूसरे दिन रविवार था। राधेश्याम सुबह-सुबह बालकिशन के घर पहुँच गया जो संयोगितागंज में रहता था। उसने बालकिशन को उसके साथ परदेसीपुरा चलने को कहा।

परदेसीपुरा में बालकिशन की बहन रहती थी। बहन के घर के सामने की लाइन में कुछ दूर एक बूढ़ा आदमी रहता था जिसे बहुत कम दिखाई देता था। बूढ़े का एक ही बेटा था जो पिछले साल हीरो बनने के चक्कर में घर से भागकर कपड़ा बिछाकर कभी अमरूद, कभी जामुन, कभी कबीट, कभी इमली बेचते थे। बालकिशन की बहन ने बताया कि जब से यह कुत्ता इनके पास आया है किसी की हिम्मत नहीं होती कि कोई इनके कबीट या अमरूद या कुछ उठा के ले जाए... या बिना पैसे दिए चल दे... या एक की जगह दो ढेरियाँ उठा ले। टॉमी पट्ठा पास में बैठा ध्यान से देखता रहता और गड़बड़ करने वाले की फौरन टाँग पकड़ लेता है। टॉमी के आने से बुड्ढे-बुढ़िया को बड़ा आराम हो गया। वर्ना पहले तो छोरी-छोरा कुछ भी उठाके भाग जाते और बुढ़िया बिचारी चिल्लाती रह जाती। और कोई नहीं तो किसी की बकरी ही मुँह मार जाती। बुड्ढे को तो पता ही नहीं चलता।

दूसरे दिन राधेश्याम हम अंतरंग दोस्तों को पूरी बात बता रहा था।

...हाँ, वह चुक्कू ही था। दूर से ही मैंने देखा, लेकिन फौरन पहचान लिया। मेरा ख्याल है कि उसने भी मुझे पहचान लिया था। वह उठकर खड़ा हो गया था। उसके कान खड़े हो गए थे। वह टकटकी लगाकर मुझे देखे जा रहा था और दुम हिला रहा था। इससे पहले कि मैं उसके और पास जाऊँ या मेरे मुँह से उसका नाम निकले, मैंने फुर्ती से साइकिल पलटाई और उस पर चढ़ते हुए चीखा, "बालकिशन बैठ!" और तेज़ी से पैडल मारता साइकिल भगाता गया। बीच में एक बार पीछे मुड़कर देखा – कहीं वह पीछे-पीछे तो नहीं रहा?... नहीं आ रहा था।

सहसा मैंने देखा राधेश्याम के गालों पर आँसुओं की धार बह रही है। वह आँसू पोंछ भी नहीं रहा था। मैंने पहली बार राधेश्याम को रोते देखा था। मेरे मुँह से अचानक निकला, "राधेश्याम! तू रो रहा है?"

हम सकते में थे। किसी को समझ में नहीं आया कि क्या करे! तभी हममें सबसे छोटा जक्कू बोला, "यार राधेश्याम! तू मुझे ही अपना चुक्कू समझ ले!"

मुन्नू ने कहा, "तू पूँछ हिला सकता है?"

जक्कू बोला, "हाँ!" और पीछे से कमीज़ उठाकर पुट्ठे मटकाकर दिखाने लगा।

सब हँस पड़े। राधेश्याम के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई। उसने अपनी लम्बी-लम्बी बाहें फैलाकर हम सबको अपने से सटा लिया।

उस समय मैंने एक बड़ी अजीब-सी खुशबू को महसूस किया। मैं तबसे ढूँढ रहा हूँ। वैसी खुशबू आज तक दुनिया में फिर कहीं नहीं मिली। क्या वह हमारे निष्कलुष प्रेम की खुशबू थी? या उसमें थोड़ी खुशबू चुक्कू की भी थी?

क्या पता! चकमक

अकबर इलाहाबादी

अकबर इलाहाबादी मशहूर शायर हुए हैं। बुढ़ापे में उनकी आँखों की रोशनी कमज़ोर हो गई थी। उन्हें ऑपरेशन करवाना पड़ा। ऑपरेशन के बाद डॉक्टर ने आँखों पर पट्टी बाँधी और अपनी फीस लेकर चलता बना। थोड़ी देर बाद उनके बेटे हसरत हुसैन कमरे में आए और उनसे हाल-चाल पूछा तो अकबर इलाहाबादी ने एक शेर कहकर अपना हाल बताया...

रोशनी आए तो हम देखें कहीं अपना हिसाब,
वो तो दो सौ ले गए आँखों पे पट्टी बाँध के।

तुम भी बनाओ

पोस्टकार्ड के आकार का और लगभग उतना ही मोटा कागज़ लो और उसे लम्बाई में बीच से आधा कर लो। अब इससे लगभग बराबर आकार की दो पट्टियाँ चित्रानुसार काट लो। इन दोनों पट्टियों को चित्रानुसार यूपिन से जोड़ लो। अब इसे ऊँचाई से गिराओ और देखो कैसे यह झूमते-घूमते नीचे आती है।

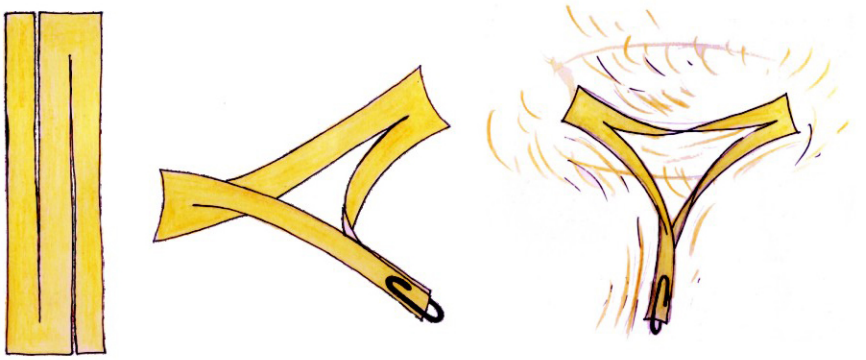

कच्ची मूँगफली लो और उसे बीच से आड़ा काट लो। दाना निकाल लो और छिलके को मनपसन्द रंगों से रंग लो। अब उन पर मनचाहे चेहरे बना लो। और फिर कागज़, ऊन, तार जैसी चीज़ों से उनके बाल, मूँछें या टोपी आदि बनाकर गोंद आदि से चिपका लो। अब इन्हें अपनी उँगलियों पर पहन लो और जैसे चाहो नचाओ।

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर